४. १८५७ का स्वतंत्रता युद्ध

१८५७ ई. में अंग्रेजी सत्ता को बुरी तरह से आघात पहुँचाने वाला भारत में एक बड़ा युद्ध हुआ । यह युद्ध अचानक नहीं हुआ । इसके पूर्व भी भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध अनेक संघर्ष हुए थे । १८५७ ई.के युद्ध की व्याप्ति और उसकी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर स्वातंत्र्यवीर सावरकर ने जिस पुस्तक में इस युद्ध को प्रस्तुत किया; उस '१८५७ चे स्वातंत्र्यसमर' (१८५७ ई. का स्वतंत्रता युद्ध) पुस्तक ने कालांतर में अनगिनत क्रांतिकारियों को अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा दी ।

१८५७ ई. के युद्ध : भारत के जिन स्थानों पर अंग्रेजों की सत्ता स्थापित हुई, वहाँ के लोगों को अंग्रेजी शासन के दुष्प्रभावों को झेलना पड़ा । कंपनी की सत्ता के कारण ही हमारा सभी स्तरों पर शोषण हो रहा है; यह बोध भारतीयों के मन मे उत्पन्न होने लगा और इस सत्ता के विरुद्ध असंतोष भी बढ़ता गया ।

किसान और साधारण लोग कंपनी सरकार के कार्यकाल में कंगाल हो गए । ऐसे में १७७० ई. में बंगाल प्रांत में बड़ा अकाल पड़ा । अंग्रेजी शासकों का साधारण लोगों के साथ आचरण बड़ा ही उदासीन एवं संवेदनशून्य रहा । १७६३ ई.से १८५७ ई. के कालखंड में बंगाल में पहले संन्यासियों और इसके बाद फकीरों के नेतृत्व में किसानों ने संघर्ष किया । ऐसे ही संघर्ष गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में भी हुए ।

उमाजी नाईक द्वारा किया गया संघर्ष प्रखर स्वरूप का था । उन्होंने एक घोषणापत्र जारी कर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने और अंग्रेजी सत्ता को न मानने का आवाहन किया । उन्होंने अपनी धाक पुणे, सातारा, अहमदनगर, सोलापुर, नाशिक, भोर आदि भागों में निर्माण की । १८३२ ई.में कंपनी सरकार ने उमाजी नाईक को बंदी बनाया और उन्हें पुणे में फांसी दी गई ।

उमाजी नाईक

भारत में आदिवासी और वन्य जनजातियों ने भी अंग्रेजी सत्ता को चुनौती दी । इन जनजातियों की आजीविका वन की संपत्ति पर चलती थी । अंग्रेजों ने कानून द्वारा उनके अधिकारों पर वज्रपात कराया । परिणामतः बिहार और छोटा नागपुर परिसर के कोलाम ओडीशा के गोंड, बिहार में संथालों ने अंग्रेजों के विरुद्ध प्रखर संघर्ष किया । महाराष्ट्र में भील, कोली (मछुआरे), पिंडारियों ने अंग्रेजों के विरुद्ध कड़े संघर्ष किए तो कोकण में फोंड-सावंतों ने अंग्रेजी सत्ता को चुनौती दी । १८५७ ई. के पूर्व देश के विभिन्न भागों में कुछ जमीनदारों और रियासतदारों ने भी प्रखर संघर्ष किया ।

क्या तुम जानते हो ?

मध्ययुगीन समय से ओडीशा में पाइक प्रणाली अस्तित्व में थी । वहाँ के विभिन्न स्वतंत्र राजाओं के जो खड़े सैनिक थे; उन्हें 'पाईक' कहते थे । राजाओं ने इन पाइकों को खेती करने के लिए भूमि दी थी । उस भूमि पर खेती कर वे अपना जीवनयापन करते थे । इसके बदले में उन्हें यदि युद्ध का प्रसंग उपस्थित हो जाता है तो राजाओं के पक्ष में युद्ध के लिए तैयार रहना है; यह शर्त थी ।

१८०३ ई. में. अंग्रेजों ने ओडीशा जीत लिया । अंग्रेजों ने ओडीशा जीत लिया । अंग्रेजों ने पाइकों की वंश परंपरागत भूमि छीन ली । फलतः पाइक क्रोधित हुए । साथ ही; अंग्रेजों द्वारा नमक पर लगाए गए करों के कारण नमक के मूल्य में वृद्धि होकर साधारण लोगों का जीवन जीना दूभर हो गया । इसके परिणामस्वरूप १८१७ ई. में पाइकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह किया । इस विद्रोह का नेतृत्व बक्शी जगनबंधु विद्याधर ने किया ।

ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में कई भारतीय सैनिक थे । कंपनी उनके साथ भेदभाव का व्यवहार करती थी । उनके वेतन तथा अन्य भत्ते अंग्रेजी सैनिकों की तुलना में बहुत कम थे । १८०६ ई. में वेल्लौर में तो १८२४ ई. में बराकपुर के विद्रोह ने उग्र स्वरूप धारण किया था ।

ये सभी संघर्ष और संग्राम उन-उन स्थानों में हुए । उनका स्वरूप स्थानीय और एकाकी था । अंग्रेजों ने बल का प्रयोग कर उनका दमन किया था । लोगों में उत्पन्न असंतोष की भावना को दबा दिया गया था परंतु वह नष्ट नहीं हुआ था । यह दावानल १८५७ ई. के स्वतंत्रता युद्ध में धधक उठा । ब्रिटिश कंपनी की सत्ता के विरुद्ध अनेक स्थानों पर संघर्ष प्रारंभ हुए । जैसे बारूद के ढेर में चिनगारी छूट जाए और उसका प्रचंड और प्रलयंकारी विस्फोट हो; ऐसी स्थिति हो गई । भारत के विभिन्न वर्गों में इकट्ठा और दमित असंतोष इस लड़ाई के रूप में प्रकट हुआ और इसका उद्रेक ऐसे अभूतपूर्व सशस्त्र युद्ध के रूप में हुआ ।

१८५७ ई. के युद्ध के कारण : अंग्रेजों के पूर्व समय में भारत में अनेक शासकों का शासन रहा । शासनों में परिवर्तन होते रहे परंतु गाँव का जीवन पहले की तरह चलता रहा । लेकिन अंग्रेजों ने प्रचलित व्यवस्था बदलकर नई व्यवस्था निर्माण करने का प्रयास किया । गाँव की जीवन प्रणाली में होने वाले परिवर्तन और उसके स्वरूप को देखकर जनता के मन में अस्थिरता और असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो गई थी ।

आ् क कारण : अंग्रेजों ने आर्थिक आय में वृद्धि करने हेतु नई राजस्व प्रणाली को चलाया । किसानों से जबर्दस्ती राजस्व की वसूली की जाती थी । परिणाम यह हुआ कि कृषि व्यवस्था चरमरा गई । इंग्लैंड के बाजार का माल भारत में खपाकर आर्थिक लाभ प्राप्त करना अंग्रेजों की नीति थी । उन्होंने यहाँ के उद्योग-धंधों पर कठोर कर लगाए । भारत का विकसित हस्तकला एवं वस्त्र उद्योग का दिवाला पिट गया । अनगिनत भारतीय कारीगर/श्रमिक बेरोजगार हो गए । इन सब के मन में अंग्रेजों के विरुद्ध असंतोष बढ़ता गया ।

सामा क कारण : भारतीयों को लगने लगा था कि अंग्रेज हमारी रीति-रिवाजों, परंपराओं, रूढ़ियों में हस्तक्षेप कर रहे हैं । सती पर रोक लगाना, विधवा विवाह को पुनः मान्यता देना जैसे कानून यद्यपि सामाजिक दृष्टिकोण से उचित थे, फिर भी अंग्रेज हमारी जीवन पद्धति में हस्तक्षेप कर रहे हैं; ऐसी सोच भारतीयों ने बना ली थी । अतः भारतीय भी असंतुष्ट बन गए थे ।

राजनी क कारण : १७५७ ई.से अंग्रेजों ने कई भारतीय राज्य हड़प लिये थे । कालांतर में डलहौजी ने अनेक रियासतों का विविध कारणों से विलय करवा लिया । प्रशासनहीनता का कारण बताकर अयोध्या के नवाब को गद्दी से हटा दिया तो सातारा, नागपुर, झाँसी रियासतों को वहाँ के शासकों के उत्तराधिकारी के अधिकार को अमान्य कर इन रियासतों का विलय कर दिया । डलहौजी की इस नीति के फलस्वरूप भारतीयों में अविश्वास और संशय का वातावरण बढ़ता गया ।

भार् ीय सै अस् ोर : अंग्रेज अधिकारी भारतीय सैनिकों के साथ तुच्छता का व्यवहार करते थे । सेना में भारतीय सैनिकों को सूबेदार पद से ऊपर वाला पद नहीं दिया जाता था । उन्हें मिलने वाला वेतन गोरे सैनिकों से कम होता था। प्रारंभ में भारतीय सैनिकों को भत्ते मिलते थे । वे भी धीरे-धीरे कम किए गए । ऐसे अनेक कारणों से भारतीय सैनिकों में असंतोष बढ़ता गया ।

ात क कारण : अंग्रजों ने १८५६ ई. में भारतीय सैनिकों को दूर तक मार करनेवाली एनफिल्ड बंदूकें दी थीं । उनमें उपयोग में आने वाले कारतूसों का ढक्कन दाँतों से खोलना पड़ता था । इन आवरणों पर गाय एवं सूअर की चरबी लगी होती है; यह समाचार चारों ओर फैल गया । इससे हिंदू और मुस्लिम सैनिकों की धार्मिक भावनाएँ आहत हुईं और सैनिक में असंतोष निर्माण हुआ ।

मंगल पांडे

दावानल धधक उठा : चरबी लगे कारतूसों का उपयोग करने को जिन सैनिकों ने विरोध किया; उनपर अनुशासन भंग की कार्यवाही की गई और उन सैनिकों को कठोर दंड दिया गया । बराकपुर की छावनी में मंगल पांडे ने अंग्रेज अधिकारी की इस अन्यायी प्रवृत्ति को विरोध करने की दृष्टि से अंग्रेज अधिकारी पर गोली चला दी । मंगल पांडे को बंदी बनाया और फाँसी दी गई । यह समाचार जंगल की आग की भाँति चारों ओर फैल गया । मेरठ छावनी के भारतीय सैनिकों की पूरी पलटन विद्रोह कर उठी । सैनिकों ने दिल्ली की ओर कूच किया । बीच रास्ते में हजारों लोग उत्स्फूर्तता के साथ उनसे जुड़ते गए । १२ मई १८५७ को सैनिकों ने दिल्ली को अपने अधिकार में कर लिया । उन्होंने मुगल शासक बहादुर शाह 'जफर' को युद्ध का नेतृत्व प्रदान किया । भारत के सम्राट के रूप में उनके नाम की घोषणा की गई ।

युद्ध की व्या : दिल्ली पर नियंत्रण हो जाने से सैनिकों का आत्मविश्वास बढ़ गया । इससे भारत में अन्य स्थानों के सैनिकों को भी प्रेरणा मिली । शीघ्र ही विद्रोह की यह आग उत्तर भारत में फैल गई । बिहार से राजपूताना तक अंग्रेज छावनियों के भारतीय सैनिकों ने विद्रोह का झंडा बुलंद किया । लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर, बनारस, बरेली, झाँसी में विद्रोह प्रारंभ हुआ । कालांतर में यह आग दक्षिण भारत में भी फैली । नागपुर, सातारा, कोल्हापुर, नरगुंद स्थानों पर विद्रोह हुए । इस युद्ध में सातारा के छत्रपति के उत्तराधिकारी शहाजी प्रताप सिंह और प्रशासक रंगो बापू जी, कोल्हापुर के चिमासाहेब, नरगुंद के बाबासाहेब भावे, अहमदनगर जिले के संगमनेर के निकट के भागोजी नाईक आदि अग्रसर थे । नाशिक जिले के पेठ, सुरगाणा की महारानी जैसी महिलाएँ भी इसमें सम्मिलित हुई थीं । १८५७ ई. में खानदेश में कजार सिंह के नेतृत्व में भीलों ने विद्रोह किया तो सतपुड़ा परिसर में शंकर शाह ने युद्ध का नेतृत्व किया । खानदेश में हुए विद्रोह में चार सौ भील महिलाएँ सम्मिलित हुई थीं ।

युद्ध का नेतृत्व : १८ वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य निर्बल बनने के पश्चात नादिर शाह, अब्दाली जैसे विदेशी शासकों ने भारत पर आक्रमण करना प्रारंभ किया । मुगल शासक उनका प्रतिकार नहीं कर सकते; यह ध्यान में आने पर मराठों ने विदेशी आक्रमणों से भारत की रक्षा का दायित्व अपने सिर पर ले लिया । इसी भूमिका को ध्यान में रखकर मराठे अब्दाली के विरुद्ध पानीपत के मैदान पर लड़े । १८५७ ई. के स्वतंत्रता युद्ध में मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकारी बहादुर शाह अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करने में असमर्थ हैं; यह ध्यान में आने पर नानासाहेब पेशवा, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे ने १८५७ ई. के स्वतंत्रता युद्ध की बागडोर अपने हाथ में ले ली । इसी के परिणामस्वरूप इस

तात्यासाहेब टोपे

नानासाहेब पेशवा

रानी लक्ष्मीबाई

बेगम हजरत महल

कुँवर सिंह

स्वतंत्रता युद्ध में हिंदू-मुस्लिम एकता के दर्शन होते हैं । मौलवी अहमद उल्ला, कुँवर सिंह, मुगल सेनापति बख्त खाँ, बेगम हजरत महल ने विविध स्थानों पर इस विद्रोह का नेतृत्व किया । दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झाँसी तथा पश्चिम बिहार में विद्रोह का स्वरूप अत्यंत उग्र था ।

की रोक-थाम : अंग्रेजों के साथ भारतीय संपूर्ण प्राणपण से लड़े । इसमें सैनिक, जमींदार, राजा-महाराजा, सेनापति और जनता का भी समावेश था । भारतीय सैनिकों के नियोजित समय से पूर्व ही विद्रोह प्रारंभ हुआ । प्रारंभ में भारतीय सैनिकों को सफलता मिलती गई परंतु अंग्रेजी सत्ता की सैनिक संख्या और प्रशासकीय शक्ति बहुत अधिक थी । अंग्रेजों ने भी विद्रोह का दमन साम, दाम, दंड और भेद नीति के अनुसार किया । इस आघात से अंग्रेज तुरंत सँभल गए और अगले छह महीनों में ही हारे हुए स्थान पुनः जीत लिये । रानी लक्ष्मी-बाई, कुँवर सिंह, अहमद उल्ला ने अपने प्राणों का बलिदान दिया । बहादुर शाह को रंगून के कारावास में रखा गया । नानासाहेब और बेगम हजरत महल

बहादुर शाह

ने नेपाल में आश्रय लिया तो तात्या टोपे दस महीनों तक अंग्रेजों के साथ लड़ते रहे परंतु विश्वासघात के कारण पकड़े गए । वे फाँसी पर चढ़े। इस तरह १८५८ ई. के अंत तक अंग्रेजों ने इस युद्ध को बड़ी कठोरता से दबा दिया ।

यद्यपि इस युद्ध का प्रारंभ भारतीय सैनिकों के असंतोष में से हुआ, फिर भी कालांतर में किसान, कारीगर, सामान्य जनता, आदिवासी अंग्रेजों के विरोध में इकट्ठे हुए । इस अन्यायकारी शासन को समाप्त करने के लिए सभी भारतीयों ने यह युद्ध किया । इस युद्ध में हिंदू, मुस्लिम, विभिन्न जातियों-जनजातियों के लोग पूरी शक्ति से खड़े हो गए । अंग्रेजों को भारत से खदेड़ देना सभी का यही एक लक्ष्य था । इसके पीछे स्वतंत्रता की प्रेरणा थी । इसीलिए इस युद्ध को व्यापक राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त हुआ ।

य ध की तक्फलि के कारण : १८५७ ई. का युद्ध निम्न कारणों से विफल रहा ।

- **य ध का संपू भारि :** यह युद्ध संपूर्ण भारत में एक ही समय में नहीं हुआ । उत्तर भारत में युद्ध की प्रखरता अधिक थी । उत्तर के भी राजपूताना, पंजाब, बंगाल का कुछ हिस्सा, पूर्वोत्तर भारत इस युद्ध से अछूते रहे ।
- **स मान्य नेि का अभाव :** इस युद्ध में भारतीय स्तर पर अंग्रेजों के विरोध में सशक्त और सर्वमान्य एक नेतृत्व निर्माण नहीं हो सका था । अतः अंग्रेजों के विरोध में एकता लाई नहीं जा सकी ।
- **रयासर्ी के सम न का अभाव :** अंग्रेजी सत्ता से त्रस्त जितनी सामान्य जनता थी; उतने ही त्रस्त रियासतदार भी थे । उनमें से कुछ रियासतदारों को छोड़ दें तो अन्य रियासतदार अंग्रेजों के प्रति निष्ठावान रहे ।
- **सैतन्की कटनीति का अभाव :** भारतीय सैनिकों में वीरता और शौर्य कूट-कूटकर भरा हुआ था परंतु उचित समय पर उचित दाँव-पेंच उन्हें खेलना नहीं आया । दिल्ली को जीतने के बाद उसे अपने अधिकार में रखना नहीं आया । इसी तरह; विद्रोहियों के पास पर्याप्त शस्त्र-अस्त्र नहीं थे । अंग्रेजों के पास बड़ी धनशक्ति, अनुशासनबद्ध सेना, आधुनिक शस्त्र-अस्त्र और अनुभवी सेनानी थे । संचार व्यवस्था उनके नियंत्रण में होने से उनकी गतिविधियाँ शीघ्रगति से होती थीं । परिणामस्वरूप भारतीय सैनिक उनके सामने अपना प्रभाव नहीं जमा पाए । युद्ध केवल वीरता के कारण ही नहीं बल्कि सैनिकी कूटनीति अथवा दाँव-पेंच के बल पर भी जीतने पड़ते हैं ।
- **अंरि ीय पस्तसर्श्वा अं के तल्ए अनकल :** रूस के साथ चल रहा अंग्रेजों का क्रिमियन युद्ध इस समय समाप्त हुआ था । इसमें अंग्रेज विजयी हुए थे । विश्व के कई देशों के साथ उनका व्यापार चलता था । अंग्रेजों के पास प्रबल नौसेना थी । इसके विपरीत स्थिति विद्रोहियों की थी ।

सर्वि ि य ध के पस्णाम

ईसट इंतड्या कंपनी का शासन समा : कंपनी की शासनसत्ता के कारण ही भारतीयों का असंतोष बढ़ता गया और अंग्रेजी सत्ता के सम्मुख १८५७ ई. के युद्ध की चुनौती खड़ी हुई; यह बोध इंग्लैंड की रानी को हुआ । उन्हें अनुभव हुआ कि भारत की अंग्रेजी सत्ता कंपनी के हाथों में सुरक्षित नहीं रह गई है । अतः ब्रिटिश पार्लियामेंट ने १८५८ ई. में कानून बनाकर ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त कर दिया । गवर्नर जनरल पद के स्थान पर वायसराय पद का निर्माण किया गया । लॉर्ड कनिंग अंतिम गवर्नर जनरल और प्रथम वायसराय बना । साथ ही, भारत का शासन चलाने के लिए भारतमंत्री पद का निर्माण इंग्लैंड के शासन में निर्मित किया गया ।

तक्क्टोरस्या रानी का घोर : इंग्लैंड की रानी विक्टोरिया ने भारतीयों को संबोधित कर एक घोषणापत्र जारी किया । इस घोषणा में आश्वासन

दिया गया कि सभी भारतीय हमारे प्रजाजन हैं । वंश, धर्म, जाति अथवा जन्म स्थान के आधार पर लोगों में भेदभाव नहीं किया जाएगा । सरकारी नौकरियाँ गुणवत्ता के आधार पर दी जाएँगी । धार्मिक मुआमलों में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा । रियासतदारों के साथ किए गए अनुबंधों का पालन किया जाएगा । किसी भी कारण से वे रियासतें समाप्त नहीं की जाएँगी ।

भार् ीय सना की पुनरचना : सेना में अंग्रेजी सैनिकों की संख्या बढ़ा दी गई । महत्त्वपूर्ण पदों पर अंग्रेज अधिकारियों को नियुक्त किया गया । तोपखाना पूर्णतः अंग्रेज अधिकारियों के नियंत्रण में रखा गया । सेना की टुकड़ियों को जाति के अनुसार विभाजित किया गया । भारतीय सैनिक इकट्ठे आकर अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह नहीं करेंगे, ऐसी सावधानी रखी गई ।

नी ग् पस्व न : अंग्रेजों ने भारतीयों के सामाजिक और धार्मिक विषयों में हस्तक्षेप न करने की नीति अपनाई । साथ ही; भारतीय समाज सामाजिक रूप में इकट्ठा नहीं होगा; इसकी सावधानी रखना प्रारंभ किया । भारतीयों में जाति, धर्म, वंश और प्रदेश के नाम पर हमेशा विवाद-संघर्ष होते रहेंगे; एक-दूसरे के प्रति भारतीयों के मन कलुषित होते रहेंगे, ऐसी नीतियाँ चलाई जाने लगीं । 'फूट डालो और राज करो' यह सूत्र अंग्रेजी शासन का रहा ।

१८५७ ई. के स्वतंत्रता युद्ध के कारण भारतीयों को लगने लगा कि अंग्रेजी सत्ता का विरोध संगठित रूप में करना चाहिए । १८५७ ई. का स्वतंत्रता युद्ध भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रेरणा स्रोत सिद्ध हुआ ।

स्वाध्याय

१. ए गए प स उ प चुनकर क् न पुनः खो ।

(उमाजी नाईक, स्वातंत्र्यसमर, लॉर्ड डलहौजी, भारतमंत्री, तात्या टोपे)

(१) स्वातंत्र्यवीर सावरकर ने १८५७ ई. के युद्ध को ..... नाम दिया ।

(२) पिंडारियों को संगठित कर ..... ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया ।

(३) १८५७ ई. के युद्ध के पश्चात भारत का शासन चलाने के लिए ..... पद इंग्लैंड की सरकार में निर्मित किया गया ।

(४) भारत की रियासतों का ..... गवर्नर जनरल ने विलय कर दिया ।

२. न क् को कारणस सर्प करो ।

(१) अंग्रेजों के विरुद्ध पाइकों ने सशस्त्र विद्रोह किया ।

(२) हिंदू और मुस्लिम सैनिकों में असंतोष उत्पन्न हुआ ।

(३) भारतीय सैनिक अंग्रेजों के सामने अपना प्रभाव जमा नहीं पाए ।

(४) स्वतंत्रता युद्ध के पश्चात भारतीय सैनिकों की टुकड़ियों को जाति के अनुसार विभाजित किया गया ।

(५) अंग्रेजों ने भारतीय उद्योग-धंधों पर कठोर कर लाद दिए ।

३. न न के उत् र प खो ।

(१) १८५७ ई. के स्वतंत्रता युद्ध के पीछे कौन-से सामाजिक कारण थे ?

(२) १८५७ ई. के स्वतंत्रता युद्ध में भारतीय विफल क्यों रहे ?

(३) १८५७ ई. के स्वतंत्रता युद्ध के परिणाम लिखो ?

(४) १८५७ ई. के स्वतंत्रता युद्ध के पश्चात अंग्रेजों ने कौन-से नीतिगत परिवर्तन किए ?

(१) '१८५७ का स्वातंत्र्य समर'- स्वातंत्र्यवीर सावरकर द्वारा लिखित पुस्तक प्राप्त करो और पढ़ो ।

(२) भारत के मानचित्र के ढाँचे में १८५७ ई. के स्वतंत्रता युद्ध के स्थानों को दर्शाओ ।

9ABYNA